श्री णमोकार पैंतीसी

मण्डल विधान

संग्रहकर्ता

ब्र. अनिल जैन

अधिष्ठाता

प्रकाशक

अमर ग्रन्थालय

श्री दिगम्बर जैन उदासीन आश्रम

584, म.गां.मार्ग, तुकोगंज, इन्दौर

श्री अभयनन्दि सैद्धान्तिक के शिष्य श्री सुमतिसागर द्वारा रचित णमोकार पैंतीसी विधान संस्कृत का श्री क्षुल्लक सिद्धसागर जी द्वारा कृत हिन्दी रूपान्तर

ग्रन्थ : श्री णमोकार पैंतीसी मण्डल विधान

★

संकलन : ब्र. अनिल जैन, एम.ए, एल.एल.बी
सम्पादक : तीर्थंकर वर्द्धमान जैन पंचांग
अधिष्ठाता : श्री दिगम्बर जैन उदासीन आश्रम
584, म.गाँ. मार्ग, तुकोगंज, इन्दौर (म.प्र)

★

संस्करण : प्रथम, मोक्षसप्तमी, सन् 2003

★

प्रतियाँ : 2000

★

मूल्य : रु. 4/00

★

प्रकाशक व प्राप्ति स्थान : श्री अमर ग्रन्थालय
श्री दिगम्बर जैन उदासीन आश्रम
584, म.गाँ. मार्ग, तुकोगंज, इन्दौर (म.प्र)

★

हमारे यहाँ प्रमुख सभी प्रकाशकों का जैन साहित्य उपलब्ध है।

अक्षर संयोजन : इन्दौर ग्राफिक्स, इन्दौर

णमोकार पैंतीसी विधान

अनादि सिद्ध मंत्र पूजा

नमस्कार पैंतीसी पूजा विधान

(मण्डल पर पुष्प क्षेपण)

नयप्रमाण के जो कर्ता हैं, घाति कर्म के जो हर्ता हैं।
केवलज्ञान दिवाकर जो हैं, लोकालोक प्रकाशक जो हैं।।१।।

अनन्त सौख्य के गृह को वंदूं, देवाधिप जिन को अभिनंदूं।
उभय लक्ष्मी भोक्ता को वंदूं, विद्येश्वरद्वय को अभिवंदूं।।२।।

सकल सौख्ययुत सिद्ध को वंदूं, जन्म-मृत्यु-जराहर वंदूं।
अष्टम भू के ईश को वंदूं, भवनाशक जिननाथ को वंदूं।।३।।

अक्षय शाश्वत आप्त को वंदूं, रोग शोक निर्वारिक वंदूं।
सिद्ध आत्म-लब्धि के दाता, सर्व सिद्धि-ऋद्धि के प्रदाता।।४।।

गणाधीश आचार्य को वंदूं, विश्व ज्ञान पारंगत वंदूं।
परम चरित्र के जो सिन्धु हैं, शिष्य सिन्धु को जो इन्दु हैं।।५।।

परम रत्नत्रय के जो गृह हैं, धर्माधार मद-नाशक जो हैं।
हित उपदेशक को मैं वंदूं, गणनायक को नितप्रति वंदूं।।६।।

उपाध्याय अति धीर को वंदूं, परमज्ञान उपदेशक वंदूं।
अंग पूर्व की खानि को वंदूं, शिष्य वर्ग सु पाठक वंदूं।।७।।

ज्ञानाभ्यास सदा जो करते, पंच महाव्रत को जो धरते।
यथाख्यात के घर जो शुद्ध हैं, जो समीचीन धर्मदीपक हैं।।८।।

स्वात्मध्यान में सदालीन जो दयानिधि हैं मौनधार जो।
तीनलोकपति गणाधीश जो, निर्मलभाव लहरीक ईश जो।।९।।

समता भाव के जो आगर हैं, महामहल वर पंचाचार हैं।
विश्वबोधमय परम शांत जो, वंदूं साधु ज्ञानी दांत जो।।१०।।

शुद्ध बीजाक्षर की यह पूजा, रचता शिव सुख पाने दूजा।
सर्वजीव त्रायक वर नौका, संसार सिन्धु से तारक लोका।।११।।

परम सुन्दर अन्तर शोभा, मूल धर्ममय हरती लोभा।
चैत्यालय या तीर्थक्षेत्र में, भूमि शुद्ध उत्तम गृह क्षेत्र में।।१२।।

मंडल सुन्दर इसका मांडे, मंगल लोकोत्तम शरणा जागे।
सहस्रनाम दश अर्घ चढ़ावे, जिनके आगे शीश झुकावे।।१३।।

सकलीकरण करे मन लाके, ध्यान मौन सहित वर लाके।
श्रावकाचार में जो लवलीन हैं, सद्दृष्टि से जो प्रवीण हैं।।१४।।

बीजाक्षर के जो ज्ञाता हैं, पंडित श्रेष्ठ परम त्राता हैं।
सम्यक्त्वमूल कारण युत जो हैं, स्नानशुद्धिसम शुद्ध भी जो हैं।।१५।।

करता है वह जिनकी पूजा, पापहारी विधान यह दूजा।
मैं भी श्रीमद् संघ के आगे, पुष्प क्षेपता चित्त लगाके।।१६।।

ॐ ह्रीं शतैक-कमलोपरि पुष्पांजलिं क्षिपामि।

।। समुच्चय पूजा।।

स्थापना

जिन शासन का सार, मंत्रराज यह जान।
सर्व पूज्य यह स्थापना, मंगलादि युत मान।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन-पंचनमस्कारमंत्र! अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं अनादिनिधन-पंचनमस्कारमंत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं अनादिनिधन-पंचनमस्कारमंत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सर्व पाप हर मंत्र को, सर्व सौख्य कर जान।
पूजूं उत्तम वारि से, मंत्रराज वर मान।।१।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन पंचनमस्कार-मंत्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व पाप हर मंत्र को, सर्व सौख्य कर जान।
पूजूं चंदन आदि से, मंत्रराज वर मान ।।२।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन पंचनमस्कार-मंत्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व पाप हर मंत्र को, सर्व सौख्य कर जान।
पूजूं अक्षत आदि से, मंत्रराज वर मान ।।३।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन पंचनमस्कार-मंत्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व पाप हर मंत्र को, सर्व सौख्य कर जान।
पूजूं मैं सुमनादि से, मंत्रराज वर मान ।।४।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन पंचनमस्कार-मंत्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व पाप हर मंत्र को, सर्व सौख्य कर जान।
पूजूं उत्तम चरुक से, मंत्रराज वर मान ।।५।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन पंचनमस्कार-मंत्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व पाप हर मंत्र को, सर्व सौख्य कर जान।
पूजूं उत्तम दीप से, मंत्रराज वर मान ।।६।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन पंचनमस्कारमंत्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व पाप हर मंत्र को, सर्व सौख्य कर जान।
पूजूं उत्तम धूप से, मंत्रराज वर मान ।।७।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन पंचनमस्कार-मंत्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व पाप हर मंत्र को, सर्व सौख्य कर जान।
पूजूं फल से मैं सदा, मंत्रराज वर मान ।।८।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन पंचनमस्कार-मंत्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व पाप हर मंत्र को, सर्व सौख्य कर जान।
पूजूं आठों द्रव्य से, मंत्र राज वर मान ।।९।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधन पंचनमस्कार-मंत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ

प्रथम बलय पूजन

प्रथमबलय-कोष्ठकोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

॥ ॐ णमो अरहंताणं ॥

ॐ प्रणव है धर्म दे, शांति ज्ञान दे जान।
वीतराग वर ध्यान से, योगी वंद्य हो मान॥१॥

ॐ ह्रीं 'ॐकार' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

ण-बीजाक्षर वारि से पाप नाश हो पुण्य।
वीत शोक करता यही, तारक हरे अपुण्य॥२॥

ॐ ह्रीं 'ण' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

मो-बीजाक्षर सिद्ध है, करे कर्म द्वय नाश।
जलादि से पूजूं इसे, गुण कर पूरे आश॥३॥

ॐ ह्रीं 'मो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

अ-बीजाक्षर प्राणि है, प्राण रक्षण ज्ञान।
गणधर ने जीवन कहा, केशव करते ध्यान॥४॥

ॐ ह्रीं 'अ' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

र-बीजाक्षर रम्य है, उभय लोक में पूज्य।
जिन रवि का यह गात्र है, पूजूं होने पूज्य॥५॥

ॐ ह्रीं 'र' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

हं-बीजाक्षरध्यान से, कल्मष होते दूर।
परमानन्द सदा करे, सेवे हो गुणपूर॥६॥

ॐ ह्रीं 'हं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

ता-बीजाक्षर धर्म से, शुद्ध स्वर्ग गति प्राप्त।
पूजूं परम सुकर्म गृह, जलादि से जिमि आप्त॥७॥

ॐ ह्रीं 'ता' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

णं-बीजाक्षर श्रेष्ठ है, ब्रह्म मूर्ति वर जान।
बोध राशि दातार है, पूजूं अर्घ प्रदान।।८।।

ॐ ह्रीं 'णं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। ॐ णमो सिद्धाणं।।

ॐकार जो लोक में, योगीश्वर का ध्येय।
लोकालोक प्रकाश-मय, रवि को पूजूं श्रेय।।९।।

ॐ ह्रीं 'ॐकार' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ण-बीजाक्षर को नमूं, सम्यग्दर्शन कार।
मनचाहे फल भी मिले, पूजूं अर्घ उतार।।१०।।

ॐ ह्रीं 'ण' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मो-बीजाक्षरलोक में, दशलक्षाण दे धर्म।
योगी का ईश्वर यही, पूजूं होता शर्म।।११।।

ॐ ह्रीं 'मो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सि-बीजाक्षर सिद्ध है, केवलज्ञान प्रकाश।
गणधर सा दे ज्ञान जो, पूजूं सदा विकास।।१२।।

ॐ ह्रीं 'सि' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्धा-बीजाक्षर है कहा, प्रमाद नाशक जान।
करे मोक्ष व्रत को वही, पूजूं अर्घ प्रदान।।१३।।

ॐ ह्रीं 'द्धा' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं-बीजाक्षर श्री करे, स्वर्ग काम्य फलदाय।
है श्री जिन ज्यों सुखमयी, यह पूजूं शिवदाय।।१४।।

ॐ ह्रीं 'णं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। ॐ णमो आइरियाणं।।

ॐ -बीजाक्षर शुद्ध है, श्री सिद्ध-गति दाय।
केवलज्ञान स्वरूप है, पूजूं अर्घ बनाय।।१५।।

ॐ ह्रीं 'ॐकार' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ण-बीजाक्षर ज्ञान-प्रद, लोक नायक ज्ञान।
सर्वाक्षर का भूप है, पूजूं, अर्घ प्रदान।।१६।।

ॐ ह्रीं 'ण' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मो-अक्षर इस लोक में, काम्यप्रद है जान।
काम हारि जिन मित्र है, पूजूं अर्घ प्रदान।।१७।।

ॐ ह्रीं 'मो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आ-बीजाक्षर ध्यान से, बढ़े नहीं संसार।
पाप ताप हरता यही, पूजूं अर्घ उतार।।१८।।

ॐ ह्रीं 'आ' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इ-बीजाक्षर रम्य है, जिनवर कथित सुजान।
चारों गति से तारता, पूजूं अर्घ प्रदान।।१९।।

ॐ ह्रीं 'इ' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रि-बीजाक्षर शुद्ध है, पंच बाण हो नष्ट।
श्री जिन सम मैं पूजता, रहे न कोई कष्ट।।२०।।

ॐ ह्रीं 'रि' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

या-बीजाक्षर शांत है, जीव राशि दे तार।
जिन गुण सम पूजूं इसे, अर्घ चढ़ा हितकार।।२१।।

ॐ ह्रीं 'या' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं-बीजाक्षर अवश्य ही, भरे पुण्य भंडार।
महायोगि कर ध्येय है, पूजूं अर्घ उतार।।२२।।

ॐ ह्रीं 'णं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। ॐ णमो उवज्झायाणं ।।

प्रणव बीज ॐकार है, तीन लोक में दीप।
लोकालोक प्रकाशता यह तो परम प्रदीप।।२३।।

ॐ ह्रीं 'ॐकार' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ण-बीजाक्षर शुद्ध है, संसार दुःख हर जान।
योगी ध्यान-गत नित्य है, पूजूं अर्घ प्रदान॥२४॥

ॐ ह्रीं 'ण' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मो-बीजाक्षर पुण्य बढ़ाता, वीतराग दीपक कहलाता।
पूजूं अर्घ चढ़ाकर ध्याऊं, इसमें अपनी लगन लगाऊं॥२५॥

ॐ ह्रीं 'मो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उ-बीजाक्षर धर्ममई है, जिन मुख से निकला यह स्वर है।
संसार ताप का हारक जानो, सुना मंत्र यह अघहर मानो॥२६॥

ॐ ह्रीं 'उ' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व-बीजाक्षर सौख्य बढावे, आत्मिक परमानन्द दिलावे।
दुःख शोक को दूर भगावे, इसकी महिमा सुर नर गावें॥२७॥

ॐ ह्रीं 'व' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्झा-बीजाक्षर को मैं ध्याऊं, ज्ञानानंद समूह बढ़ाऊं।
इन्द्र पूज्य निज तन सम ध्याऊं, पूजूं इसके गुणगण गाऊं॥२८॥

ॐ ह्रीं 'ज्झा' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

या-बीजाक्षर मती बढ़ावे, वीतरागमय सतत सुहावे।
नर सुर से वंदित को ध्यावें, पूजा इसकी दिव्य रचावें॥२९॥

ॐ ह्रीं 'या' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं-बीजाक्षर कर्म नशावे, हिंसक कर्म को दूर भगावे।
प्रकृष्ट सिद्धि कर्तार सुहावे, पूजों अर्घ चढ़ाकर ध्यावे॥३०॥

ॐ ह्रीं 'णं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ-बीजाक्षर निर्मल ध्यावें, कर्ममूल को दूर हटावें।
संसार ताप नहिं उसे सतावें, पूजें ध्यावें भक्ति बढ़ावें॥३१॥

ॐ ह्रीं 'ॐकार' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ण-बीजाक्षर मन्त्र सु राजा, दुःख पलावें सुधरे काजा।
परमानन्द करे नित ध्याता, पूजूं वंदूं यह है त्राता॥३२॥

ॐ ह्रीं 'ण' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मो-बीजाक्षर प्राण ईश है, मुनिगण ध्याते नमा शीश है।
आत्म ब्रह्म के गुण गण पावें, इसको पूजें शिव पद पावें॥३३॥

ॐ ह्रीं 'मो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लो-बीजाक्षर मंगलप्रद है, शिव पद दायक यह नायक है।
आदिदेव के मुख से निकला है, इससे बढ़ती आत्मकला है॥३४॥

ॐ ह्रीं 'लो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ए-बीजाक्षर ब्रह्म-युक्त है, पाप के क्षालन में तत्पर है।
सुदर्शन का बीज ज्ञान है, अष्ट द्रव्य से पूजूं वर है॥३५॥

ॐ ह्रीं 'ए' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स-बीजाक्षर लोक ईश है, जैन लोक को मान्य रूप है।
पूजूं अर्घ चढ़ाकर ध्याके, श्रीजिन भाषित चित्त लगाके॥३६॥

ॐ ह्रीं 'स' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्व-बीजाक्षर है जिन भाषित, सिद्धमंत्र शुभशांति विकासित।
आत्म गंग से सदा प्रवाहित, पावन करता यह अपना हित॥३७॥

ॐ ह्रीं 'व्व' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सा-बीजाक्षर पुण्य ईश है, स्वर्ग-मोक्ष-प्रद झुका शीश है।
आत्म धर्म की प्रभाराशि है, पूजूं इसको आत्मकाशी है॥३८॥

ॐ ह्रीं 'सा' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हू-बीजाक्षर धर्म ईश है, धर्म काम्य दे नमा शीश है।
स्वर्ग मोक्ष गति देता धीश है, पूजूं हरता मन की रीश है॥३९॥

ॐ ह्रीं 'ह्' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं-बीजाक्षर जाप जपेंगे, द्वादशगण भी इसे रटेंगे।
भव्य जीव जीवन का दाता, भावें अमृत मय यह भाता।।४०।।

ॐ ह्रीं 'णं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-- o --

द्वितीय बलय पूजन

द्वितीयबलय-कोष्ठकोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

।। चत्तारि मंगलं।।

च-बीजाक्षर वर्ग का राजा, पंचमि व्रत दायक शिवकाजा।
योगेश्वर के मुख से निकला, पूजूं अष्ट द्रव्य से सकला।।१।।

ॐ ह्रीं 'च' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्ता-बीजाक्षर सुख से युक्त, जिन भाषित यह पाप से मुक्त।
व्रत शुद्धिकर है यह नित्यं, पूजूं अर्घ चढ़ाकर नित्यं।।२।।

ॐ ह्रीं 'त्ता' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रि-बीजाक्षर है कर्म शत्रुहर, दुःख बैरी का है पैना शर।
सुव्रत दाता को मैं वन्दूं, गुण सागर को पूजूं वन्दूं।।३।।

ॐ ह्रीं 'रि' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मं-बीजाक्षर सूत्र का ईश्वर, पूजूं अर्घ से जो परमेश्वर।
दत्त-भावना बोध का ईश्वर, सूत्रबोधकर कहा महेश्वर।।४।।

ॐ ह्रीं 'मं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग-बीजाक्षर पूज्य कहाता, पूज्यपाद कर श्रेष्ट सुहाता।
श्री जिनधर्म प्रदायक त्राता, अष्ट द्रव्य से पूज रचाता।।५।।

ॐ ह्रीं 'ग' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लं-बीजाक्षर श्रुत का अंश, केवलज्ञान प्रदायक वंश।
मति प्रदायक बीज है जानो, पूजूं अर्घ से उत्तम मानो।।६।।

ॐ ह्रीं 'लं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ अरहंता-मंगलं।।

अ-बीजाक्षर विश्व विदित है, पंच प्रकार मुनि भाषित है।
काम्य प्रदायक लोकमाहिं जो, पूजूं उत्तम अक्षर है जो॥७॥

ॐ ह्रीं 'अ' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

र-बीजाक्षर परम देह है, वीत शोक जय-दाय गेह है।
धर्मध्यानकर शर्म शांति कर, पूजूं नित्य सु परम सुधाकर॥८॥

ॐ ह्रीं 'र' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हं-बीजाक्षर शांति बढ़ाता, क्रोध लोभ भयगिरि को ढाता।
अष्टमदों का कहा विजेता, पूजूं थाल अर्घ मैं लेता॥९॥

ॐ ह्रीं 'हं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ता-बीजाक्षर सूर्य समाना, मुनि ध्यान गत शुभ है माना।
पुण्य-जीव को भव जल तारे, अष्ट द्रव्य ले पूजूं सारे॥१०॥

ॐ ह्रीं 'ता' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मं-बीजाक्षर शुद्धि प्रदाता, विश्व जीव को हित बतलाता।
साधू गुण समूह को पूजूं, अर्घ उतारूं भक्ति से पूजूं॥११॥

ॐ ह्रीं 'मं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग-बीजाक्षरसूत्र का स्वामी, मंत्र साध्य कर है यह नामी।
चित्तस्वच्छकर्त्ता अति रम्य, पूजूं महिमा योगी गम्य॥१२॥

ॐ ह्रीं 'ग' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लं-बीजाक्षर दान का स्वामी, दान स्वर्ग-गति देता नामी।
लब्धि तथा कल्याण प्रदाता, पूजूं वंदूं पाऊं साता॥१३॥

ॐ ह्रीं 'लं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ सिद्धा मंगलं॥

सि-बीजाक्षर पांडित्य प्रदाता, भवनाशक भव्यों का त्राता।
आत्म-ब्रह्म श्री से जो होता, पूजूं वंदूं आनन्द होता।।१४॥

ॐ ह्रीं 'सि' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१४॥

द्धा-बीजाक्षर दु:ख का हारी, मोक्ष धाम दाता सुखकारी।
सत्यवचन जिनमुख से निकला,आनंद प्रदाता है यह सकला॥१५॥

ॐ ह्रीं 'द्धा' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मं-बीजाक्षर को हम ध्यावें, इन्द्र पूज्य है गुण हम गावें।
जरा मरण के दु:ख का हर्ता, अर्घ संयुक्त सौख्य सुकर्ता॥१६॥

ॐ ह्रीं 'मं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग-बीजाक्षर शांति प्रदाता, संसार ताप को दूर हटाता।
परमानंद परम पद दाता, पूजूं होती दूर असाता॥१७॥

ॐ ह्रीं 'ग' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लं-बीजाक्षर उत्तम जिनभाषित, दु:ख शोक संताप विनाशित।
पूजूं भव हंता दे साता, इसको मानूं उत्तम त्राता॥१८॥

ॐ ह्रीं 'लं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ साहू मंगलं॥

सा-बीजाक्षर मंगलकर है, योग प्रदायक विद्याधर है।
सम्यग्दर्शन शुद्ध बनाता,पूजूं अर्घ चढ़ाकर ध्याता॥१९॥

ॐ ह्रीं 'सा' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हू-बीजाक्षर पुण्य प्रदाता, धर्म बीज है रोग नशाता।
धर्म का ज्ञाता जगदानंदी, पूजूं इसको परमानंदी॥२०॥

ॐ ह्रीं 'हू' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मं-बीजाक्षर को मैं वन्दूं,जरातीसार संग्रहिणी हन्दूं।
विशाल बोध दायक मैं वन्दूं,पूजूं नितप्रति मैं अभिनन्दूं।।२१॥

ॐ ह्रीं 'मं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग-कार बीज मंगलकर्ता है, मृत्यु शोक को यह हरता है।
घोरोपसर्ग विघातक जानो, पूजों वंदों पावन मानों॥२२॥

ॐ ह्रीं 'ग' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लं-कार बीज अक्षर धर्माकर, धर्ममूर्ति है धर्म दिवाकर।
परम ज्ञान सूर्यमय जानो, तत्त्व विधायक उत्तम मानो॥२३॥

ॐ ह्रीं 'लं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं॥

दोहा

के-कार बीज यह शुद्ध है, जप से भव भय दूर।
सुगति करे, दुर्गति हरे, पूजूं यह है सूर॥२४॥

ॐ ह्रीं 'के' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

व-कार बीज भवतारक माना, लोकांतिक वर जाप्य है जाना।
अधर्म-दु:ख कारक का हंता, पूजूं इसको मानूं संता॥२५॥

ॐ ह्रीं 'व' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लि-कार बीज यह ब्रह्मजाप है, उपेन्द्र सेव्य है बिबुधज्ञान है।
चन्द्रकांति सम शांतिध्येय है, पूजूं इसको साधु ज्ञेय है॥२६॥

ॐ ह्रीं 'लि' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प-कार बीजाक्षर भव्यसेव्य है, भवादिदु:खप्रविनाशनीय है।
विकार दूर करता वर बोध, पूजूं इसे अर्घ वर शोध॥२७॥

ॐ ह्रीं 'प' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ण्ण-कार शुभ बीज मार्ग है,वाच्य रूप जो जगत कांत है।
जीव स्वरूप प्रकाशक कारी, पूजूं मैं शुभ शोक जु हारी॥२८॥

ॐ ह्रीं 'ण्ण' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्तो-कार बीज पदार्थ बोधकर, सुदेव से उक्त परमगपूर्वकर।
जरादि दोषादि विनाशकरी, पूजूं इसे मैं सब सौख्यकारी॥२९॥

ॐ ह्रीं 'त्तो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध-कार बीज जिनधर्म पात्र है, सुसिद्धिदायक गुण अष्टगात्र है।
आत्माधिराज सुजात पवित्र है, कर्मकान्तार हत्री पवित्र है।।३०।।

ॐ ह्रीं 'ध' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

म्मो-कार बीज भव दुःख हर्ता, पाप प्रणाशी शिव सौख्य कर्ता।
आनन्ददाता भय त्रास हर्ता, पूजूं इसे मैं यह विश्वभर्ता।।३१।।

ॐ ह्रीं 'म्मो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मं-कार बीजं, भुवनेक बीजं, जिनेन्द्र भाषित यह श्रेष्ठ बीजं।
श्री रामचन्द्रादि यतीन्द्र वंद्यं, पूजूं इसे मैं यह विश्व वंद्यं।।३२।।

ॐ ह्रीं 'मं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग-कार बीजं जिननाथबीजं, अखंड है जो गणदेव बीजं।
सदा सुधीनाथ विचारयोग्य है, पूजूं इसे मैं यह ध्यान योग्य है।।३३।।

ॐ ह्रीं 'ग' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

लं-कार शुभ बीज है, धर्मेक रूप श्रुत बीज।
विचार दक्ष वर ध्यान से, ध्याता मैं यह बीज।।३४।।

ॐ ह्रीं 'लं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-- ० --

तृतीय बलय पूजन

तृतीयबलय-कोष्ठकोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

॥ चत्तारि लोगुत्तमा ॥

च-कार बीज जय देता है शुचि, मुनोन्द्रगीत में मम होत है रुचि।
पुराण रूप भुवनेक भूप है, पूजूं इसे मैं अति सौम्य रूप है।।१।।

ॐ ह्रीं 'च' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्ता-कार यह बीज विश्व है, विस्तार बोध करता सुविश्व है।
दुखीजनों को यह तारता है, पूजूं इसे मैं अघनाशता है।।२।।

ॐ ह्रीं 'त्ता' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रि-कार बीजाक्षर कर्म वह्नि है, जल के समान हो शुद्ध करे अतीव है।
सुकर्म ध्यानामृतपेय रूप है, पूजूं इसे मैं यह सौख्य कूप है॥३॥

ॐ ह्रीं 'रि' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : लो-कार बीज सुर वर्ग से, मुनि से पूजित पूत।
मन चाहे फल भव्य को, देता है यह सूत॥४॥

ॐ ह्रीं 'लो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग-सहित-उ बीज जिनागत, तारक भव्य समूह।
सुभारती से साध्य है, पूजूं इसकी रूह॥५॥

ॐ ह्रीं 'गु' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्त-बीज सु परमात्म को, बतलाता वर रूप।
जिनके वचन प्रभाव से, गणधर से चिद्रूप॥६॥

ॐ ह्रीं 'त्त' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मा-बीज है भव-भय हारी, भव्य सिन्धु से सेव्य विचारी।
स्वर्ग-मोक्ष पद का यह दाता, इसे पूजते चारण त्राता॥७॥

ॐ ह्रीं 'मा' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ अरहंता लोगुत्तमा॥

गौतमादि भाषित अ-बीज, वीतराग गति का सु बीज।
बीजों का ईश्वर यह बीज, अरचूं मैं उत्तम यह बीज॥८॥

ॐ ह्रीं 'अ' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

र-कार बीज अक्षर वर पुण्य, योगीन्द्रध्येय हरे जो अपुण्य।
जिनागम पूज्य परम विधान, पूजूं इसको शांति निधान॥९॥

ॐ ह्रीं 'र' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हं-बीजाक्षर भव-भयहारी, श्रीरामचन्द्र से पूजित भारी।
स्वर्गमोक्ष में शीघ्र पठावे, सुखपावे जो ध्यान लगावे॥१०॥

ॐ ह्रीं 'हं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ता-बीजाक्षर लोकेश्वर पूज्य, श्री देता जप से तप पूज्य।
आदिनाथ ने इसे बताया, इन्द्रों ने इसका गुण गाया।।११।।

ॐ ह्रीं 'ता' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लो-बीजाक्षर लोक में मान्य, भव्यों का तारक है मान्य।
जिनशासन उद्योतक मानों, पूजों वन्दों उत्तम मानों।।१२।।

ॐ ह्रीं 'लो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग-सहित उ-बीज बुद्ध है, धर्मामृत यह परम शुद्ध है।
आचार सिद्धि कर कामविनाशी, पूजूं मैं भी यह अविनाशी।।१३।।

ॐ ह्रीं 'गु' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्त-बीज है विश्व भूप है, सर्वज्ञ बीज यह सौख्य रूप है।
शोक हरे यह काम विदारी, पूजूं इसको आत्म विहारी।।१४।।

ॐ ह्रीं 'त्त' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मा-बीजाक्षर भव-जल नौका, भव्य मुनि के हरता शोका।
काम अग्नि को मेघ समाना, पूजूं इसको यह अमलाना।।१५।।

ॐ ह्रीं 'मा' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। सिद्धा लोगुत्तमा।।

सि-बीजाक्षर विमल सुखकारी, शुक्लमयी लेश्या अविकारी।
चारण इसका ध्यान लगाते, भवसागर से वे तिर जाते।।१६।।

ॐ ह्रीं 'सि' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्धा-बीजाक्षर आदिनीत है, इन्द्रों से भी पूज्य गीत है।
चारण इसका ध्यान लगाते, भवसागर से वे तिरजाते।।१७।।

ॐ ह्रीं 'द्धा' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लो-बीजाक्षर विश्व ऋद्धि दे, शांति कान्ति साम्राज्य बढ़ावे।
स्वर्ग मोक्ष दे खुशी-खुशी से, इसको पूजूं बड़ी खुशी से।।१८।।

ॐ ह्रीं 'लो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग-सहित उ बीज धरम जप, है लोकांतिक देवों का तप।
तत्त्वार्थ दान करूं मैं नित्य, पूरे जाने भोग अनित्य।।१९।।

ॐ ह्रीं 'गु' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्त-बीजाक्षर गणधर गावें, जाप करें शिवपुर को जावें।
सिंह आदि की भीत नशावे, पूजूं इसको मन से ध्यावे।।२०।।

ॐ ह्रीं 'त्त' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मा-बीजाक्षर भव्य रूप है, भव तरन को नौका रूप है।
आग्रह अंधकार का हारी, पूजूं इसको यह अघहारी।।२१।।

ॐ ह्रीं 'मा' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। साहू लोगुत्तमा।।

दोहा : सा-बीजाक्षर धन्य है, पाप बीजहर मान।
दुर्व्याधि रागाग्नि को, शमन करे यह ज्ञान।।२२।।

ॐ ह्रीं 'सा' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणनाथ हू-बीज है, रक्षा करे सुधर्म।
पूर्वधरों का ध्येय है, देता है यह शर्म।।२३।।

ॐ ह्रीं 'हू' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लो-बीजाक्षर को जपो, करे शुद्ध यह भाव।
यह नौका भवसिन्धु को, तरने को सद्भाव।।२४।।

ॐ ह्रीं 'लो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हृदय कमल का हार है, गु-बीज निरवार।
सर्प विसूचिका आदि को, हरे बीज भव हार।।२४।।

ॐ ह्रीं 'गु' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरपति के पद को करे, त्त-बीजाक्षर सार।
मुनि हृदय में बस रहा, ध्यान करे अघहार।।२६।।

ॐ ह्रीं 'त्त' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयी करता बीज 'मा', सिद्धि करे अघहार।
केवलज्ञान प्रकाश को, करता है निरधार।।२७।।

ॐ ह्रीं 'मा' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।।

के-बीजाक्षर ज्योति जगावे, काम भाव संताप नशावे।
सुरपति इसके दास कहावें, इसको पूजें शिवपद पावें।।२८।।

ॐ ह्रीं 'के' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व-बीजाक्षर अमिय समाना, कुमति कुश्रुति को दूर हटाना।
जन्म मरण के रोग हरेगा, आत्मिकसुख में अवश धरेगा।।२९।।

ॐ ह्रीं 'व' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लि-बीजाक्षर मन्त्र सुहाता, गगनगामी मुनि के मनभाता।
अघ का नाम निशान मिटाता, पूजूं इसको दु:ख घटाता।।३०।।

ॐ ह्रीं 'लि' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प-बीजाक्षर रम्य कहाता, योगीजन के मन को भाता।
जन्म मरण के रोग मिटाता, पूजूं इसको पाप हटाता।।३१।।

ॐ ह्रीं 'प' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ण्ण-बीजाक्षर धनजनदाता, मरण समाधि सिद्धि सुखदाता।
चक्री का पद यह देता है, शिवपद में यह धर देता है।।३२।।

ॐ ह्रीं 'ण्ण' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्तो-का जो ध्यान लगाता, विविध परमसौख्य को पाता।
भव-भय उसके पास न आता, ज्ञायक परमानन्द सुहाता।।३३।।

ॐ ह्रीं 'त्तो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध-बीजाक्षर सिद्धि प्रदाता, अघ हरता मुक्तिक सुखदाता।
धर्म जिनेश्वर का करता है, उत्तम पद में यह धरता है।।३४।।

ॐ ह्रीं 'ध' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

म्मो-से मन का हार बनाऊं, धर्म कर्म में चित्त लगाऊं।
अपने में ही मैं रम जाऊं, ज्ञायक परमानन्द रहाऊं॥३५॥

ॐ ह्रीं 'म्मो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम मरण का नाश कराऊं, लो-बीजाक्षर में लोलाऊं।
मुनिजन मन को शांति दाता, पूजूं मेरा मन हुलसाता॥३६॥

ॐ ह्रीं 'लो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गु-बीजाक्षर नाना व्रत देता, यम नियमों में खेंच ही लेता।
भव जल तरने पोत समाना, ज्ञायक समताभाव अमाना॥३७॥

ॐ ह्रीं 'गु' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्त-बीजाक्षर कृत पाप नशावे, अपने को अपने में लावे।
मनोकामना पूरी करता, सुरनर किन्नर का मन हरता॥३८

ॐ ह्रीं 'त्त' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भय गण को 'मो' मार भगावे, जो कोइ इसका ध्यान लगावे।
गगन गामि मुनि चारण ध्यावें, इसके गुण का पार न पावें॥३९॥

ॐ ह्रीं 'मो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-- ० --

चतुर्थ बलय पूजन

प्रथमबलय-कोष्ठकोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

॥ चत्तारि सरणं पव्वज्जामि ॥

च अक्षर के गुण को गावें, मन धन रक्षा करने ध्यावें।
ज्ञान ध्यान में लीन बनाता, योगीजन के मन को भाता॥१॥

ॐ ह्रीं 'च' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्ता-राक्षस ओघ नशावे, काम हरे सुख शांति बनावे।
कर्महारि इसको हम पूजें, मोक्ष मार्ग हमको सब सूझें॥२॥

ॐ ह्रीं 'त्ता' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रि-बीजाक्षर सुखका दाता, उत्तम भाव-बोध का दाता।
केवलज्ञान को प्रकट कराता, पूजूं होती देर असाता।।३।।

ॐ ह्रीं 'रि' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स-बीजाक्षर रोग नशावे, पुत्र कलत्र लोक में पावे।
विश्वज्ञान ध्यान मन लावे, आतम ज्ञान नाम वह पावे।।४।।

ॐ ह्रीं 'स' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

र-बीजाक्षर गुण का धारी, शाकिनि डाकिनि हाकिनि हारी।
भूत-प्रेत नहिं पासमें आवें, यक्षादिक सब दूर पलावें।।५।।

ॐ ह्रीं 'र' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं-बीजाक्षर धर्म प्रदाता, लाकिनि काकिनि दूर हटाता।
चौर आदि के क्लेश नशाता, चोर आदि नहिं पास में आता।।६।।

ॐ ह्रीं 'णं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प-बीजाक्षर कार्य बनाता, वांछित फल का है यह दाता।
सिंह शूकरादिक से बचाता, सर्व प्रमेय प्रकाश कराता।।७।।

ॐ ह्रीं 'प' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्व-बीजाक्षर मृत्युजयी है, ध्यानकाल बहु अतिशयी है।
मुद्गल तोयद भीति भगाता, नागिन का भय दूर पलाता।।८।।

ॐ ह्रीं 'व्व' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्जा-बीजाक्षर है सुखदाता, शत्रु हरे वर बोध कराता।
आत्मतेज को प्रकट करावे, पूजन का यह भाव बढ़ावे।।९।।

ॐ ह्रीं 'ज्जा' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राक्षस तस्कर दूर पलावे, 'मि' अक्षर मन को अति भावे।
भूमि भूप विद्याधर ध्यावें, जो कोइ इसका ध्यान लगावें।।१०।।

ॐ ह्रीं 'मि' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ अरहंते सरणं पव्वज्जामि॥

अ-बीजाक्षर पुत्र दिलावे, अंग पूर्व में इसको ध्यावें।
जीव स्वरूप बताने वाला, निराकार आकार निराला॥११॥

ॐ ह्रीं 'अ' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

र-बीजाक्षर परमभोग है, ज्योति देवों के स्तुति योग है।
सिंह सर्प का दर्प नशाता, आधि-व्याधि को पास न लाता॥१२॥

ॐ ह्रीं 'र' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हं-बीजाक्षर पाप नशावे, जिनके तन सम इसको ध्यावे।
मुनिजन मन को सदा सुहाता, आत्मबोध का यह है दाता॥१३॥

ॐ ह्रीं 'हं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ते-बीजाक्षर स्वर्ग धाम दे, भव जल तरने को नौका दे।
राज्य सिद्धि जपने-तपने से, होती है श्रद्धा धरने से॥१४॥

ॐ ह्रीं 'ते' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स-बीजाक्षर सद्ध्यान धरावे, संसार दुःख को दूर हटावे।
गुणस्थान पर शीघ्र चढ़ावे, भव पातक में नहीं गिरावे॥१५॥

ॐ ह्रीं 'स' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

र-बीजाक्षर सिद्धि सौख्य है, मोक्षगामि नर का सुसेव्य है।
इसकी जो भी पूजा करते, निज को उत्तम पद में धरते॥१६॥

ॐ ह्रीं 'र' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : भव्य जीव को प्रिय लगे, 'णं' बीजाक्षर सार।
नाग लोक आदिक जिसे, ध्याते हैं निरधार॥१७॥

ॐ ह्रीं 'णं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प-बीजाक्षर ज्ञान की, करता शुद्धि महान।
देशों में समता करे, पूजूं इसे सुजान॥१८॥

ॐ ह्रीं 'प' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्व-बीजाक्षर सिद्धि को, देता है यह जान।
कालकूट का नाश हो, जप से इसके मान।।१९।।
ॐ ह्रीं 'व्व' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्जा-बीजाक्षर तारता, धर्म ध्यान कर जान।
सात लक्ष इसको जपे, जल हो अमृत मान।।२०।।
ॐ ह्रीं 'ज्जा' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मि-बीजाक्षर स्वर्ग दे, अमर बनाता जान।
है अभंग धार्मिक अमी, इसको भजता ज्ञान।।२१।।
ॐ ह्रीं 'मि' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। सिद्धे सरणं पव्वज्जामि।।

दोहा : सि-बीजाक्षर सिद्धि का, वाचक है यह जान।
प्राणी पीड़ा दूर हो, इसका यदि हो ध्यान।।२२।।
ॐ ह्रीं 'सि' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्धे-बीजाक्षर ज्ञान बढ़ाता, विमल भाव जीवों में लाता।
विमल धर्म स्व-पर में करता, जीवों की यह बाधा हरता।।२३।।
ॐ ह्रीं 'द्धे' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स-बीज है भूषण जीवों का, भव हर परमातम भव्यों का।
जिनके मुख से यह भाषित है, स्वर व्यंजन से यह अन्वित है।।२४।।
ॐ ह्रीं 'स' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

र-बीजाक्षर शक्ति बढ़ाता, गणेश भी गुण इसके गाता।
रत्नत्रय यह तारण हारा, उभय नयों से हमने धारा।।२५।।
ॐ ह्रीं 'र' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं-बीजाक्षर शील निधाना, भव समुद्र तारण परधाना।
अधिक गुणों का यह बोधक है, कर्माश्रव का यह रोधक है।।२६।।
ॐ ह्रीं 'णं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प-बीजाक्षर है शंकर सा, धन करता हरता अरिशर-सा।
तीन जगत के ईश्वर जैसा, वरदाता गुण सागर ऐसा॥२७॥

ॐ ह्रीं 'प' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्व-बीजाक्षर भव्य हितंकर, सुजन भक्तिकरता तीर्थंकर।
मुनिजन की जय भवहर्ता है, भव्य जीव पूजन करता है॥२८॥

ॐ ह्रीं 'व्व' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञा-बीजाक्षर यह सुमान है, रक्षक है यह परम शान है।
शरण भव्य जीवों का तारक, पूजें इसको जो भव-हारक॥२९॥

ॐ ह्रीं 'ज्ञा' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मि-बीजाक्षर पावन करता, पुत्र मित्र कुलत्र जु भरता।
मन वांछित फल को यह देता, स्वर्ग मोक्ष पद में धर देता॥३०॥

ॐ ह्रीं 'मि' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ साहू सरणं पव्वज्जामि॥

सा-बीजाक्षर जग जीवन है, गणधरादि सेवित यह धन है।
विमल वर्ण यह शुभ उपदेशक, इसको ध्याते मुनि उपदेशक॥३१॥

ॐ ह्रीं 'सा' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हू-बीजाक्षर धर्म प्रदाता, मद हर्ता गुण मैत्रि बढ़ाता।
दशलक्षण यह धर्म का सर्जक, पाप कार्य का है यह वर्जक॥३२॥

ॐ ह्रीं 'हू' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स-बीजाक्षर जिन मुख खिरता, यश करता जय देता फिरता।
भवहर भव्य सुखाकर सिन्धु, सिद्ध-सिन्धु माने शम-सिन्धु॥३३॥

ॐ ह्रीं 'स' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

र-बीजाक्षर धर्म विदांवर, परम मोक्ष वश करे चिदंबर।
षोडशकारण भेद हि जानो, सब जन का हितकारक मानो॥३४॥

ॐ ह्रीं 'र' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं-बीजाक्षर भव भय हारी, परम सुधाकर ज्ञानबिहारी।
गगनगामिचारण भी ध्यावें, इसके गुण हम किस विधि गाव॥३५॥

ॐ ह्रीं 'णं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प-बीजाक्षर गुण व्रत रक्षक, सुख संपति कर पाप का भक्षक।
भव संताप मिटाने वाला, उत्तम पथ दर्शानेवाला॥३६॥

ॐ ह्रीं 'प' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विकट कर्म विपाक विदारे, व्व-बीजाक्षर भव जल तारे।
दुर्गति हर यह सुगति पठावे, इसका यश हम मिलकर गावें॥३७॥

ॐ ह्रीं 'व्व' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञा-बीजाक्षर भव भय हरता, भवसिंधु से पार है करता।
मुनि जनमनशमधन का रक्षक, पाप दुःख का है यह भक्षक॥३८॥

ॐ ह्रीं 'ज्ञा' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मि-बीजाक्षर गणधर तारे व्रत समूह जन के मन धारे।
सकल बोध, हरे यह भ्रांति, देता है यह अनुपम शांति॥३९॥

ॐ ह्रीं 'मि' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ केवली पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि॥

के-बीजाक्षर लोक में उत्तम, विपदजन्म हरे यह सत्तम।
इसके जप से शिव पद पावें, इसको पूजें हम नित ध्यावें॥४०॥

ॐ ह्रीं 'के' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व-बीजाक्षर मदन नशावे, सर्व इन्द्र यक्षादिक ध्यावें।
इसको पूजें शिव पद पावें, इससे सारे पाप पलावें॥४१॥

ॐ ह्रीं 'व' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लि-बीजाक्षर त्रिभुवन नायक, ज्ञान जन्य पारद यह लायक।
गणधर का यह पंकज जानो, इसको पूजो उत्तम मानो॥४२॥

ॐ ह्रीं 'लि' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प-बीजाक्षर परम गुरु सम, इसके जप से शुद्ध बने हम।
इसको ध्यावें भव मिट जावे, इसको पूजें शोक नशावे।।४३।।

ॐ ह्रीं 'प' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ण्ण-धन के भरे खजाने, बुद्धि बढ़ावे कुबेर सम माने।
यह समाधि से सुधा पिलाता, इसके जप से मरण पलाता।।४४।।

ॐ ह्रीं 'ण्ण' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तं-बीज व्रत शील दिलाता, वाणी को गौतम दिखलाता।
जन समूह का यह लोचन है, भव के बंधन का मोचन है।।४५।।

ॐ ह्रीं 'तं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध-बीजाक्षर संसृति हरता, यति मुनिऋषि के मन में रहता।
त्रिभुवन वंदित पावन जानो, इसको उत्तम अनुपम मानो।।४६।।

ॐ ह्रीं 'ध' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

म्मं-बीजाक्षर त्रिभुवन मोहन, ऋषि नायक यह उत्तम है धन।
सकल बोध करे यति दान से, करत पूजन हैं हम ध्यान से।।४७।।

ॐ ह्रीं 'म्मं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स-बीजाक्षर त्रिभुवन शरणा, मनसु शुद्धि से पूजन करना।
सच्चे सुख को धर्म समाना, हमने इसको उत्तम जाना।।४८।।

ॐ ह्रीं 'स' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

र-बीजाक्षर रज हर जानो, सबका आश्रय है यह मानो।
घट-घट उत्तम ज्ञान बढ़ावे,.त्यागी जन जो दान दिलावे।।४९।।

ॐ ह्रीं 'र' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं-बीजाक्षर जरा मिटावै, त्यागीजन जो दान दिलावै।
परम धरम कर सौख्य बढ़ावै, भोग आदि की चाह घटावै।।५०।।

ॐ ह्रीं 'णं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प-बीजाक्षर स्वपर प्रकाशे, यह जजिहै निज ज्ञायक भासे।
अज्ञान हरे यह अज्ञ जनों का, पाप हरे यह भव्य जनों का।।५१।।

ॐ ह्रीं 'प' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्व-बीजाक्षर सन्मति दाता, सकल पापहर गुणगण त्राता।
जिन शासन को दिव्य बनाता, स्याद्वाद को यह चमकाता।।५२।।

ॐ ह्रीं 'व्व' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञा-बीज यह पुण्य प्रदाता, ताप हरे कुल सौख्य बढ़ाता।
तन को उत्तम रूप बनाता, इससे बल निज का जगजाता।।५३।।

ॐ ह्रीं 'ज्ञा' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मि-बीजाक्षर शिक्षा देता, विकट कर्म भंजन कर देता।
परम मुक्ति साम्राज्य दिलाता, भव भय भंजन यह कहलाता।।५४।।

ॐ ह्रीं 'मि' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-- ० --

पंचम बलय पूजन

पंचमबलय-कोष्ठकोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

।। ॐ ह्रीं शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।।

प्रणव को पूजे सुख बढ़ जाता।
दु:ख पास में कभी न आता।।१।।

ॐ ह्रीं 'ॐकार' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ह्रीं-बीजाक्षर को पूजें हम।
शांति करे भरता है दम।।२।।

ॐ ह्रीं 'ह्रीं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शां-बीज सुख देता सार।
भव्य जीव को देता तार।।३।।

ॐ ह्रीं 'शां' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिं-बीजाक्षर भव भय हारी।
इससे बनते शम दम धारी।।४।।

ॐ ह्रीं 'तिं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कु-बीजाक्षर पूजे ध्यावें।
अष्ट द्रव्य से गुण गण गावें।।५।।

ॐ ह्रीं 'कु' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रु-बीजाक्षर को पूजेंगे।
अर्घ चढ़ा कर हम ध्यायेंगे।।६।।

ॐ ह्रीं 'रु' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कु-बीजाक्षर भव का घाती।
इसको पूजें होती ख्याती।।७।।

ॐ ह्रीं 'कु' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रु-बीज अज्ञान नशावे।
गुरु के चरणों में ले जावे।।८।।

ॐ ह्रीं 'रु' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वा-बीजाक्षर भव दुःख हर्ता।
साम्य भाव मन में नित भरता।।९।।

ॐ ह्रीं 'स्वा' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हा-बीजाक्षर जन मन हारी।
पाप पलायन करता भारी।।१०।।

ॐ ह्रीं 'हा' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न्यायादिक का संग करावे, मुनिजन का जो ध्यान करावे।
मंगल लोकोत्तम में मन लावे, पंच गुरु की शरण पठावे।।

ॐ ह्रीं अनादि सिद्ध मन्त्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं शतैक-सप्त-अष्टोत्तर कमलोपरि पुष्पांजलिं क्षिपामि।

(निम्नांकित मंत्र का १०८ बार जाप करें)

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा सर्व शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

परमगुणों के परम खजाने, सप्त दु:ख लोपक हम जाने।
त्रिभुवन को जो पावन करते, मन चाहे उत्तम फल भरते।।१।।

भव-हर जो हैं आप कहाते, केवलरवि से हित बतलाते।
नाना नय में दक्ष कहाते, पक्षपात को सदा मिटाते।।२।।

भरत तथा ऐरावत के दश, विदेहक्षेत्र के आठ तथा शत।
भूतकाल में हुए अनन्ता, आगे भी जिनराज अनन्ता।।३।।

णमो अरिहंताणं जनत्राता, समवसरण त्रिभुवनजग भ्राता।
अष्टप्रातिहार्य शुभलक्षण, कर्मप्रकृति रिपु हत सुविचक्षण।।४।।

गर्भ जन्म भय नाशन संता, रोग जरा मरणादि प्रहंता।
अष्ट कर्मरिपुदहन सुकर्ता, अष्टगुणादि सुमूल-विभर्ता।।५।।

णमो सिद्धाणं मंत्र सुकारण, जयकर भव हर जन वर तारण।
काम क्रोध कंदर्प विदारण, पंच प्रकार संसार निवारण।।६।।

णमो आयरियाणं मुनिनायक, आचार्य स्वामि यति जन गणत्रायक।
गुण छत्तीस भुवन विख्याता, पंचाचार शिष्य जन पाता।।७।।

सूरि नाम भव्य जन तारण, संघ चतुर्विध वृद्धि का कारण।।
धर्म द्वय विस्तार सुपारण, दीक्षा-शिक्षा बोध प्रसारण।।८।।

अंग एक दश पठन पवित्र, चउदह पूर्वगत शुद्ध चरित्र।
शिष्य वृन्द पाठन भुविसूरा, नवनय भेद कथन गुण पूरा।।९।।

सुगुण पंचविंशति भव तारण, धर्माधर्म संदेह विदारण।
पाठक नाम महा गुणवंता, चतुरथ परमेश्वर जयवंता।।१०।।

उष्णाकाल श्री साधु सुगिरि तल, त्रिभुवनरूप ध्यानगत कर तल।
वर्षा काल योगघृत तरुतल, शीतकाल सरितामुनितट थल।।११।।

अट्ठाबीस सुगुणधर मुनिवर, पंच परम ईश्वर वर शंकर।
निशिदिन मौन परमपद धाता, परमार्थकपदवी जन त्राता।।१२।।

घत्ता : जय जय पंचाधिप, जिन मदनाधिप, पंच परम गुरु लोकपति।
श्री अभयचन्द्र पद, अभयनन्दि गुरु, सुमतिसागर जिन ध्यान पति॥

ॐ ह्रीं 'ग' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : उदर रोग था मिट गया, सिर का गया जु रोग।
परमानन्द निज में भया, 'सिद्धि सिन्धु' गत भोग॥

इत्याशीर्वादः

आरती

ॐ जय अरहंताणं, स्वमी जय अरहंताणं।
भक्ति भाव से नित प्रति, प्रणमों सिद्धाणं॥ ॐ जय.

दर्शन ज्ञान अनन्ता, शक्ति के धारी। स्वामी.।
यथाख्यात है जिसमें, कर्म शत्रु हारी॥ ॐ जय.

हे सर्वज्ञ सर्वदर्शी सुख अनन्त पाये। स्वामी.।
अगुरुलघु अमूर्तिक, अव्यय कहलाये॥ ॐ जय.॥

णमो आयरियाणं छत्तीस गुण धारक। स्वामी.।
जैन धर्म के नेता संघ के संचालक॥ ॐ जय.॥

णमो उवज्झायाणं, चरणं शरणं दाता। स्वामी.।
अंग उपांग पढ़ावत, ज्ञान-दान दाता॥ ॐ जय.॥

णमो लोए सव्वसाहूणं, ममता मद हारी। स्वामी.।
सत्य अहिंसा अचौर्य ब्रह्मचर्य धारी॥ ॐ जय.॥

ब्रह्मचारी कहे शुद्ध मम ध्यान धरे। स्वामी.।
पावन पंच परमेष्ठी, प्रत्याख्यान करे॥ ॐ जय.॥

ॐ जय अरहंताणं, स्वमी जय अरहंताणं।
भक्ति भाव से नित प्रति, प्रणमों सिद्धाणं॥ ॐ जय.

---o---

नवकार मंत्र ही महामंत्र

---:o:---

नवकार मंत्र ही महामंत्र, निज पद का ज्ञान कराता है।
नित जपो शुद्ध मन-वच-तन से, मनवांछित फल का दाता है।
नवकार मंत्र ही महामंत्र...

पहिला पद श्री अरिहंताणं, यह आत्म-ज्योति जगाता है।
यह समोशरण की रचना का, भव्यों को याद दिलाता है॥
नवकार मंत्र ही महामंत्र...

दूजा पद-श्री सिद्धाणं है, यह आत्मिक शक्ति बढ़ाता है।
इससे मन होता है निर्मल, अनुभव का ज्ञान कराता है॥
नवकार मंत्र ही महामंत्र...

तीजा पद श्री आयरियाणं, दीक्षा में भाव जगाता है।
दु:ख से छुटकारा शीघ्र मिले, जिन मत का ज्ञान बढ़ाता है॥
नवकार मंत्र ही महामंत्र...

चौथा पद श्री उवज्झायाणं, यह जैन-धर्म चमकाता है।
कर्माश्रव को ढीला करता, यह सम्यक्-ज्ञान कराता है॥
नवकार मंत्र ही महामंत्र...

पंचम पद श्री सव्व साहूणं, यह जैन तत्त्व सिखलाता है।
दिलवाता है यह ऊंचा पद, संकट से शीघ्र बचाता है॥
नवकार मंत्र ही महामंत्र...

तुम जपो भविक-जन महामंत्र, अनुपम वैराग्य बढ़ाता है।
नित श्रद्धा से मन्त्र जपने से मन को शान्त बनाता है॥
नवकार मंत्र ही महामंत्र...

सम्पूर्ण रोग को शीघ्र हरे, जो मंत्र रुची से ध्याता है।
जो भव्य सीख नित ग्रहण करे, वो जामन-मरण मिटाता है॥
नवकार मंत्र ही महामंत्र...

---o---

णमोकार मंत्र स्तुति

---:o:---

ॐ णमो अरिहंताणं, ॐ णमो प्रभु सिद्धाणं।
ॐ णमो आइरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं।
ॐ णमो लोए सव्व साहूणं॥ ॐ णमो॥

(१)

प्रथमहिं श्री अरिहन्त परमप्रभु, गुण अनन्त धारी॥
॥स्वामी गुण.॥
ज्ञान अनन्ते दरश अनन्ते, सुख बल भण्डारी॥ ॐ णमो.॥

(२)

दूजे सिद्ध सदा सुख दाता, शिवपुर के वासी॥स्वामी शिव.॥
पूर्ण शुद्ध परमातम प्रभुजी, अविचल अविनाशी॥ ॐ णमो.॥

(३)

तीजे श्री आचार्य परम गुरु, छत्तीस गुण धारी।
॥स्वामी छत्तीस.॥
पंचाचार अचारी स्वामी, मुनि संघ संचारी॥ ॐ णमो.॥

(४)

चौथे श्री उवज्झाय गुरूजी, स्वाध्याय धारी॥ स्वामी स्वा.॥
ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, नित अभ्यास कारी॥ ॐ णमो.॥

(५)

पंचम सब मुनिराज लोक के, रत्नत्रय धारी॥ स्वामी रत्न.॥
आठ बीस गुण मूल सहित, शुद्धातम चारी॥ ॐ णमो.॥

(६)

ऐसो पंच णमोक्कारो स्वामी, सव्व पावप्पणासणो॥
॥ स्वामी सव्व.॥
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवई मंगलं॥ ॐ णमो.॥

---o---